%%A. D. 1190 ― 1435

%%or Śaka 1112 – 1357

%% p. 673

NO. 353

Lakshmī-Narasiṃha Temple at Simhāchalaṃ<1>

( S. I. I. Vol. VI, No. 839; A. R. No. 284-P of 1899 )

Ś. 1297 ( ? )

(१।) स्वस्ति श्री । सत्पात्रो भूसुवर्न्नाशुकमुखनि[खि]लद्रव्य संप्पद् गुणाढ्यस्सामान्य-

(२।) स्स . जात . मविभवं मा[व]य[त्] भाववेदी [।] उत्साहादि त्रिश[क्ति]-

प्रकटननमिता .

(३।) शेषसाभंतवग्गो(र्ग्गो) मंत्राश्री[भी]मनार्य्यो भुवि जयतु चिरम्मंडलेशोरुकी-

(४।) र्त्तिः ।। [१] शाके(का)व्दे शैल नागारुणपरिगणिते मासि चाषाढसज्ञे सप्तम्यां कृष्णपक्षे

(५।) सुरगुरुदिवसे सिहशैलेश्वरस्य । सोयं स्नानाय कुंभद्वयमकृत कृतेर्न्नि-

(६।) त्त्यमानेतुमंभो वृत्ति शंखादिसन्मंगलरुचिरतराः पट्टिकाश्चाष्ट-

(७।) पात्रं । [२] ए[का]खडाज्ययुक्ताधिकमधुरपयश्चाष्टं कुं[भा]ज्यसिद्धान

(८।) प्रादाद् गोस्तत्वसंख्यास्तदवनकृतये वल्लभस्याधिवृत्तिं [।] स[द्भक्त्या]-

चःद्रतारं सकल-

(९।) सुकृतसाम्राज्यसंवृद्धहेतोद्धंम्मैरेतैस्तु [तु]ष्टा नरहरिरनिशं पातु (तु)श्री[भी]म-

(१०।) पात्रं । [३] श्रीशकवरुषवुलु १ ८७ गुनेंटि अ(आ)षाढ वहु[ल]सप्तमियु

(११।) ..... गुरुवारमुनांडु<2> ओड्डादि भीमनपेगड तनकु

<1. In the sixteenth niche of the verandah round the central shrine of this temple.>

<2. The corresponding date seems to be the 21st June, 1375 A. D., Thursday, according to the Amānia system if the date is S. 1297. In S. I. I. the date is put as S. 1287. If it is taken into consideration, the corresponding date should be the 12th June, 1365 A. D., Thursday, according to the Purnimānia system. The word “नाग” indicates nine as in the case of other inscriptions.>

%%p. 674

(१२।) ईष्टार्त्थसिद्धिपरिपूर्त्तिगा श्रीनरसिहनाथुनिकि नित्यमु

(१३।) [न्नु] तन पेट्टिन वेंडिकडबलकु ... ... ... ...

(१४।) श्रीरामनायुनिकि नेडिपेटनु पुटंडु क्षेत्रमु पेटेनु धूपा-

(१५।) बसरान अष्टमंगलालकुं वेट्टिन वेंडिरे वुलु एनिमिदि मापटि धूपा-

(१६।) बसरानकु नित्यमुन्नु कुंचेंडु अज्यवटनि पालुतेच्चि पेटनु सिं-

(१७।) [गिरि]किलारि कोडुकु चंद्र किलारि शमुन वेटिन मोदालु इरुवै ए-

(१८।) नु २५ ईतनि जीतानकु चोडवराननु पुट्टंडु क्षेत्रमु पेट्टेनु । ई पा[लु] अर-

(१९।) गिप्प वेट्टिन वेंडिकुडुक ओकंडु नित्य अरपल मेऋ [अ]खंडुनकु ने-

(२०।) तिकिन्नि श्रीभडारमंदु पद्मनिधिगा वेट्टिन गडमाडलु पदि इंतवटु धर्म्म उ-

(२१।) न्नु आचंद्रार्क्कस्थाइगं(गा)जेल्ल गलदु ई धर्म्म[वु] श्रीवैष्णव रक्ष श्री श्री श्री [।।]

(२२।) ई भीमनपेग्गड तनकु निष्टार्त्थसिद्धिगा नित्यमुनु पवलु सहस्रनाम रेंडु

(२३।) [जन]मु नरसिंहक[व]चमु ओकरुन्नु जपिवि अंदु प(प्र)दक्षी(क्षि)न(ण) १ ...

(२४।) ... विदिय सहस्रनाम ओकरु[न्नु] नरसिह कवचमु ओक-

(२५।) [रुन्नु]जांपचि अन्नाद [प्र]दक्षिणाय[न] . . पेट्टेनु प्रदा(धा)नि नरसिहजी[य]-

(२६।) नकु लकुमावरमंदु . . नु<\*>

<\* The inscription ends here abruptly.>